बुधिया की सैर...

कहानी परमाणु बिजली घर के सैर की...

भाग-2

अभी तक आपने पढ़ा कि किस तरह से समीर ने बुधिया और अन्य गाँव वालों को परमाणु बिजली घर से जुड़ी तमाम जानकारियाँ दीं...

उसने न केवल गाँव वालों को परमाणु बिजली घर से होने वाले फायदे को समझाया, बल्कि उनके मन में कई वर्षों से चली आ रही अज्ञानता और रुढ़िवादिता को भी दूर करने का प्रयास किया। उसके इसी सराहनीय प्रयास के कारण, गाँव वालों के मन से परमाणु ऊर्जा के प्रति फैली हुयी शंका और भ्रांतियां काफी हद तक समाप्त हुयी और साथ ही उसने गाँव वालों को परमाणु बिजलीघर की सैर का जो वादा किया था, उसे भी उसने पूरा किया।

तो आइये, बुधिया और गाँव वालों के साथ चलते हैं परमाणु बिजली घर की रोमांचक यात्रा पर...

देखते हैं कि बुधिया और गाँव वाले इस सैर का कैसे मजा उठाते हैं...

पिछली बार समीर द्वारा परमाणु बिजली घर के घूमने की बात किये जाने पर सभी गाँव वाले मुखिया जी के घर पर पहुँचते है... और उनसे परमाणु बिजली घर की सैर कराने के लिये कहते हैं...
(मुखीयाजी समीर को फोन लगाते हुये...) हैलो समीर बेटा...
दादाजी ! प्रणाम !
खुश रहो बेटा... समीर... बुधिया काका, पार्वती काकी और अन्य गाँव वाले परमाणु बिजली घर घूमने की बात कर रहे हैं... क्या तुम तैयार हो?
क्यों नहीं दादाजी ? मैं अभी परमाणु बिजलीघर के अधिकारियों से बात करके आपको थोड़ी देर में बताता हूँ...
(थोड़ी देर बाद...)
हैलो दादाजी !
हैलो ! हाँ समीर बेटा... तुम्हारी बात हुयी ?

हाँ दादाजी... मेरी बात भी हुयी और वो लोग खुशी-खुशी तैयार भी हो गये हैं... मैं दो दिन बाद गाँव आता हूँ... और आप सभी को वहाँ आकर मिलता हूँ... और हाँ, बुधिया काका... पार्वती काकी और अन्य सभी लोगों से कहियेगा कि वे सब तैयार रहें... मैं दो दिन के बाद वहाँ पूरी तैयारी के साथ पहुँचूंगा और उन्हें वहाँ से राजस्थान परमाणु बिजली घर की सैर कराऊँगा... अब मैं फोन रखता हूँ... दो दिन के बाद मिलूँगा... प्रणाम दादाजी !.
जीते रहो बेटा...
लो भई बुधिया तुम्हारा काम तो हो गया... अब तो तुम लोगों की सैर पक्की... हा... हा... हा...
(मुखिया और सभी गाँव वाले हँस पड़ते हैं...)
ठीक है मुखियाजी... अब हम सभी चलते हैं, दो दिन बाद सुबह ८ बजे हम सभी यहीं पर मिलेंगे... तब तक के लिये राम राम...
राम राम भाईयों राम राम !
दो दिन बाद... सभी गाँव वाले मुखियाजी के घर की तरफ जाते हुये...)

राम-राम मुखियाजी...
राम राम, राम-राम! आ गये तुम सब लोग... तुम सब की प्रतीक्षा कर रहा था...
पर मुखिया जी... समीर बेटा कहाँ है? वो तो हमें कहीं दिखायी नहीं दे रहा है...
हाँ मुखिया जी, मुझे भी नहीं दिखा...
कहीं ऐसा तो नहीं समीर बेटा ने हमें बुद्धू बना दिया...
हाँ बचपन में भी वो ऐसी ही शैतानियाँ किया करता था...
(सब के सब खुसुर-फुसुर करने लगते हैं और एक दूसरे की तरफ देखते हैं...)

(हँसते हुये...) अरे नहीं भई... ऐसा बिल्कुल भी नहीं है... थोडा सबर करो... समीर आता ही होगा... वो देखो, आ गया...
(तभी समीर एक बड़ी सी बस से उतरता है और गाँव वालों की तरफ बढ़ता है...)
प्रणाम दादाजी !
खुश रहो बेटा... जीते रहो !
आप सब को भी मेरा सादर प्रणाम ! अरे वाह ! आप सब तो आज बहुत ही अच्छे लग रहे हैं... क्यों बुधिया काका... आज तो आप काफी खुश दिखायी दे रहे हैं...
हाँ बेटा... परमाणु बिजली घर घूमने के बारे में सोच कर काफी खुशी हो रही है... सोचता हूँ कैसा होगा... कितना बड़ा होगा...
हाँ बेटा, हम सब भी बहुत ही उत्सुक हैं वहाँ जाने के लिये...

तो चलिये... फिर देर किस बात की? सारे लोग इस बस में बैठ जाइये और थोड़ी ही देर में हम सब वहाँ पहुँच जायेंगे...
ठीक है बेटा... (सब के सब बस में बैठने के लिये चल पड़ते हैं...)
(थोड़ी देर बाद बस चल पड़ती है...)
क्यों बुधिया काका... कैसा लग रहा है? मजा आ रहा है?...
हाँ बेटा... हम सब को खूब मजा आ रहा है... अब तो बस जल्द पहुँचने का इन्तजार है... लेकिन बेटा एक बात तो हम तुमसे पूछना ही भूल गये...
क्या हुआ काका ? क्या पूछना भूल गये ?...
यही.... कि परमाणु बिजली घर में तुम्हारी पहचान कैसे हुयी ? तुम्हें इतनी ज्यादा जानकारी कैसे हुयी? आखिर तुमने ये किया कैसे ?

(हँसते हुये...) जानता था काका कि आप मुझसे ये प्रश्न जरूर पूछेंगे... दरसल जब मैं अपनी इंजीनिअरिंग की पढ़ाई कर रहा था, उसी वक्त मुझे राजस्थान परमाणु बिजली घर में दो माह की ट्रेनिंग करने का अवसर प्राप्त हुआ और मैंने वहाँ दो माह तक रह कर सारी चीजों को बारीकी से देखा... इसी लिये मैंने आप सब को उस दिन परमाणु बिजलीघर से जुड़ी तमाम बातें बतायी थीं... समझे काका?
समझ गया बेटा... तुम तो वास्तव में बहुत ही समझदार हो गये हो...
(थोडी ही देर बाद बस अचानक से परमाणु बिजली घर के मेन गेट पर रुकती है)
लीजिये काका... आ गया परमाणु बिजली घर... हम सब पहुँच गये... अब आप सब बस से उतर कर एक जगह खड़े हो जाइये... मैं जाकर सुरक्षा विभाग के अधिकारियों से बात करता हूँ...
राजस्थान परमाणु बिजली घर ५-६
बहुत अच्छा समीर बेटा... जैसा तुम कहो...
सभी गाँव वाले बस से उतर जाते हैं और एक तरफ खड़े हो जाते हैं... और वहाँ की सुरक्षा व्यवस्था देखकर दंग रह जाते हैं...
राजस्थान परमाणु बिजली घर ५-६
समीर सुरक्षा गेट की तरफ बने कमरे में जाता है...
इसी बीच बुधिया और गाँव वाले गेट से अंदर झांकते हुये...
आप लोगों में जिसके पास, मोबाइल, कैमरा या अन्य उपकरण हो वे कृपा करके यहाँ जमा करा दें... परमाणु बिजली घर के अंदर ये सभी सामान निषेध है...
अब आप सब बारी बारी से अपना पास बनवा ले ।
(सब के सब अपना मोबाइल, कैमरा इत्यादि जमा करा देते हैं)
(सभी लोग एक एक कर अपना प्रवेश पत्र बनवाते हैं)

तभी समीर दो अधिकारियों के साथ वहाँ पहुँचता है...
अच्छा समीरजी... इन सब लोगों का पास बन गया है, अब आप सब लोग बस में जाकर बैठ जाइये । यहाँ से अब आप परमाणु बिजली घर में प्रवेश करेंगे । वहाँ पर एक और सुरक्षा घेरा होगा, जहाँ पर आपकी तलाशी ली जायेगी और आपको अंदर जाने की अनुमति मिल जायेगी...
आपका बहुत बहुत धन्यवाद सर !
(समीर गाँव वालों का अधिकारी से परिचय करवाता है...)
काका ये अमित कुमारजी हैं... आगे की सैर हमें अमित कुमारजी करवायेंगे...
आप सब को मेरा नमस्कार ! आप सब का राजस्थान परमाणु बिजली घर में स्वागत है... आइये, अब हम सब लोग अंदर चलेंगे...
(सब लोग बस में जाकर बैठ जाते हैं, गेट खुलता है और बस अंदर प्रवेश करती है...)

भाइयों और बहनों, अब हम जिस जगह से गुजर रहे हैं इसे हम एक्सक्लूजन जोन कहते हैं। यहाँ पर बिना अनुमति के प्रवेश नहीं होता हैं ।
अच्छा ! लेकिन यहाँ काम क्या होता है ?
दरसल, परमाणु बिजली घर के चारों ओर १.६ किलोमीटर के क्षेत्र में सघन वृक्ष और जंगल होता है जहाँ पर हरे-भरे वातावरण होने के कारण लाखों पक्षियों, तितलियों और अन्य जीव-जन्तुओं का संरक्षण किया जाता है... जिससे वातावरण काफी स्वच्छ रहता है ।
अरे वाह ! सचमुच यहाँ तो बहुत ही हरियाली है... चारों तरफ बहुत ही स्वच्छ वातावरण है... और क्या हम भी चिड़ियाँ और तितलियाँ देख सकते हैं ?
क्यों नहीं.. अरे भाई, आगे बायीं तरफ रोकना...
(बस रुक जाती है और लोग नीचे उतर कर वहाँ घूमने लगते हैं...)

अरे वाह ! कितना सुन्दर दृश्य है...
बहुत ही सुन्दर वातावरण है... देखो, कितनी सारी चिड़ियाँ हैं...

अरे हाँ... वो देखो मोर... कितना सुन्दर है... मज़ा आ गया देख कर...

दरसल सुरक्षा की दृष्टि से भी ये स्थान काफी महत्वपूर्ण होता है और इस स्थान का उपयोग न केवल हम इन विलुप्त प्राय: पक्षियों के संरक्षण के लिये करते हैं बल्कि संकट के समय अगर परमाणु बिजली घर में कोई दुर्घटना हो जाती है तो उससे निकलने वाले विकिरण के फैलने को काफी हद तक रोका जा सकता है ।
ओह! तो ये बात है... इसीलिये परमाणु बिजली घर के चारों ओर १.६ किलोमीटर का एक्सलूजन जोन बनाया जाता है...
(इसके बाद सब लोग बस में दुबारा बैठकर अन्दर की तरफ जाने लगते है... थोडी देर बाद परमाणु बिजली घर का दूसरा गेट दिखायी देता है...)
भाइयों और बहनों... अब आप सब लोग बारी-बारी से बस से उतर कर नीचे आ जाइये... यहाँ से अब हम सुरक्षा केन्द्र से होते हुए परमाणु बिजली घर में प्रवेश करेंगे...
जी... बिल्कुल...
(सब लोगे उतर जाते हैं... और सुरक्षा जाँच स्थल से होकर परमाणु बिजली घर के अन्दर प्रवेश करते हैं...)
(सुरक्षा जाँच से गुजरते हुए...)

(अन्दर पहुँचते ही परमाणु बिजली घर का दूर से ही काफी सुन्दर दृश्य दिखायी देता है जिसे देखकर सभी गाँव वाले रोमांचित हो उठते हैं...)
अरे बाप रे ! ये तो कितना विशाल और बड़ा है...
अरे हाँ... बहुत ही खुबसुरत दिख रहा है..

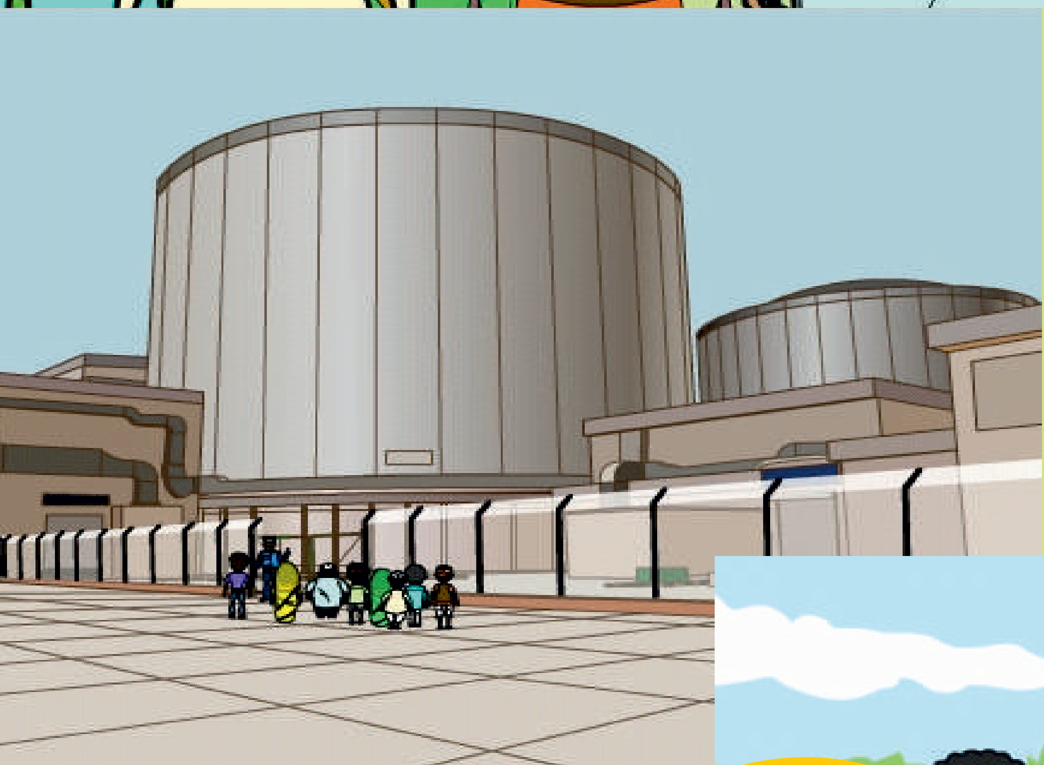

आप लोग ये जो गोल गुम्बद जैसा देख रहे हैं, ये रिएक्टर भवन है... ये परमाणु बिजली घर की सबसे महत्वपूर्ण जगह है जहाँ से बिजली बनाने की प्रक्रिया शुरु होती है... इस भवन में मुख्य रुप से दो दीवारें होती हैं... पहली दीवार और दूसरी दीवार... दोनों ही दीवारें कंक्रीट की बनी होती है और अत्यंत मजबूत होती है...

अच्छा! क्या हम सब इसको अन्दर से भी देख सकते हैं?

क्यों नहीं? बड़े आराम से इसके अंदर जा सकते हैं लेकिन अन्दर जाने से पहले आप सब लोगों विशेष प्रकार के कपड़े और दस्ताने पहनने होंगे...
आइये, मैं अब आप सब लोगों को इसकी अंदर से सैर करवाता हूँ...
(इसके बाद सब लोग विशेष प्रकार के कपड़े, दस्ताने और टी.एल.डी. / डोज़ीमीटर नामक उपकरण पहनकर प्रवेश करते हैं...)
अच्छा सर, हमें ये बताइये कि इस भवन में दो दीवारे क्यों बनायी गयी हैं... हमारे घरों में तो सिर्फ एक ही दीवार होती है...
बहुत ही अच्छा सवाल किया है बुधिया ने... असल में सुरक्षा की दृष्टि से हम दो दीवारें बनाते हैं... अगर कभी किसी दुर्घटनावश विकिरण का जरा सा भी रिसाव हो तो वो पहली दीवार के अन्दर तक ही सीमित रहेगा... मान लीजिये कि बहुत ही विकट परिस्थिति में विकिरण प्रथम दीवार से बाहर जाता है तो उसके बाद की दूसरी दीवार उसे बाहर निकलने नहीं देगी... साथ ही दोनों दीवारों के बीच में हम रिक्त स्थान भी रखते हैं जिससे कि विकिरण वहीं तक सीमित रहे... अब आप समझे, हम दो दीवारें क्यों बनाते हैं ?
लेकिन ये दीवारें कितनी मजबूत होती है? क्या ये टूट भी सकती हैं?

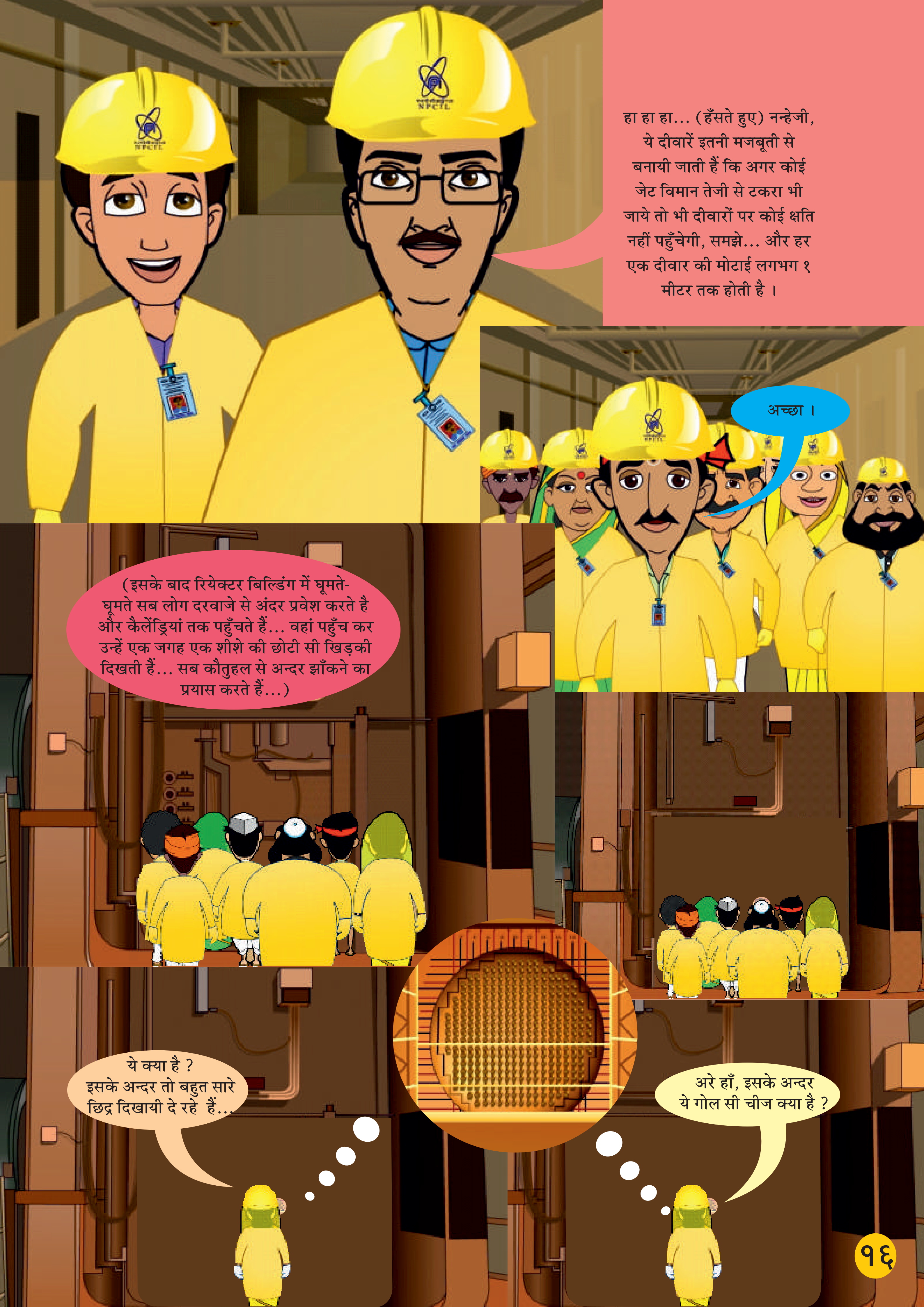
हा हा हा... (हँसते हुए) नन्हेजी, ये दीवारें इतनी मजबूती से बनायी जाती हैं कि अगर कोई जेट विमान तेजी से टकरा भी जाये तो भी दीवारों पर कोई क्षति नहीं पहुँचेगी, समझे... और हर एक दीवार की मोटाई लगभग १ मीटर तक होती है ।
अच्छा ।
(इसके बाद रियेक्टर बिल्डिंग में घूमते-घूमते सब लोग दरवाजे से अंदर प्रवेश करते है और कैलेंड्रियां तक पहुँचते हैं... वहां पहुँच कर उन्हें एक जगह एक शीशे की छोटी सी खिड़की दिखती हैं... सब कौतुहल से अन्दर झाँकने का प्रयास करते हैं...)
ये क्या है ? इसके अन्दर तो बहुत सारे छिद्र दिखायी दे रहे हैं...
अरे हाँ, इसके अन्दर ये गोल सी चीज क्या है ?

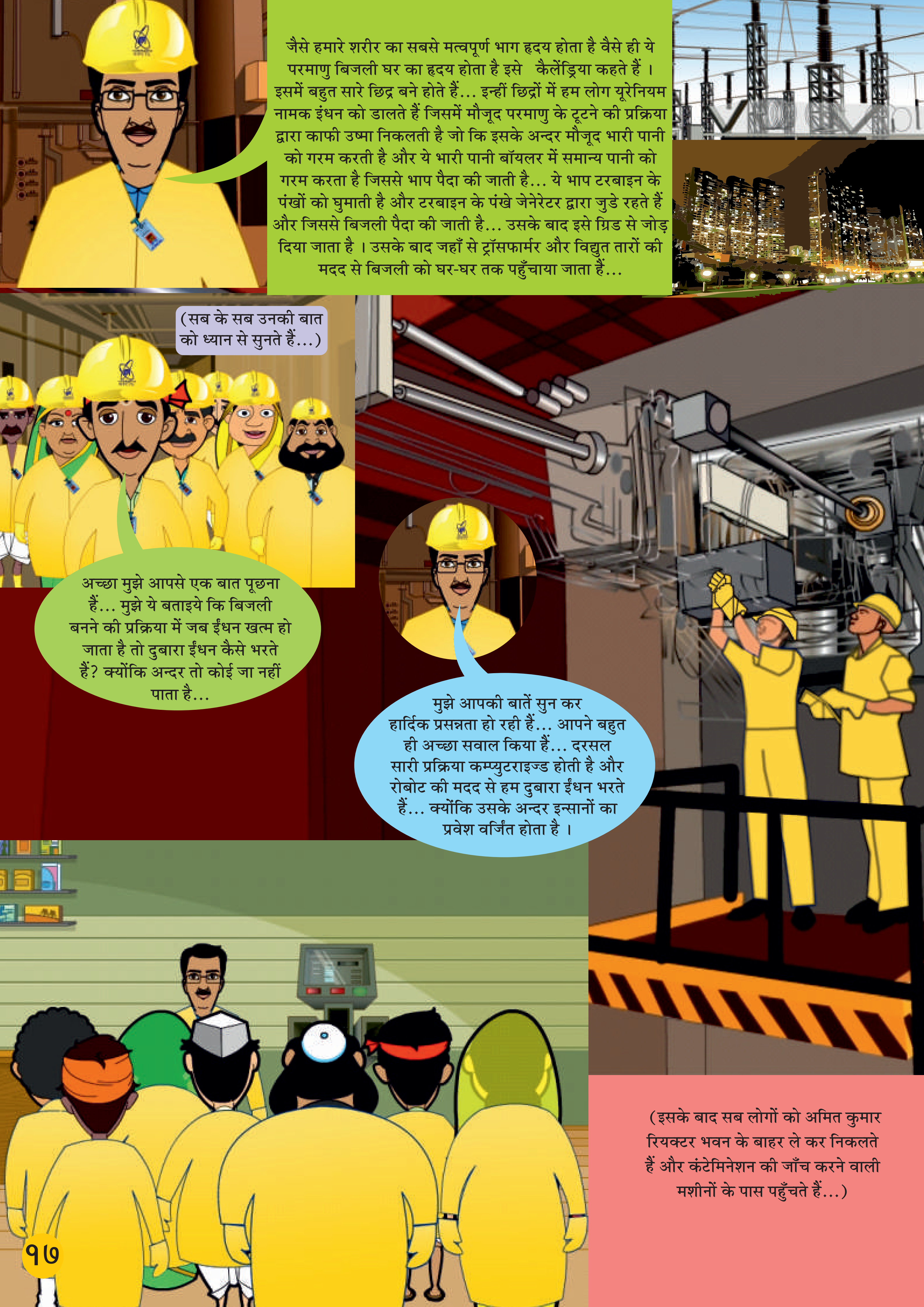
जैसे हमारे शरीर का सबसे मत्वपूर्ण भाग हृदय होता है वैसे ही ये परमाणु बिजली घर का हृदय होता है इसे कैलेंड्रिया कहते हैं । इसमें बहुत सारे छिद्र बने होते हैं... इन्हीं छिद्रों में हम लोग यूरेनियम नामक इंधन को डालते हैं जिसमें मौजूद परमाणु के टूटने की प्रक्रिया द्वारा काफी उष्मा निकलती है जो कि इसके अन्दर मौजूद भारी पानी को गरम करती है और ये भारी पानी बॉयलर में समान्य पानी को गरम करता है जिससे भाप पैदा की जाती है... ये भाप टरबाइन के पंखों को घुमाती है और टरबाइन के पंखे जेनेरेटर द्वारा जुडे रहते हैं और जिससे बिजली पैदा की जाती है... उसके बाद इसे ग्रिड से जोड़ दिया जाता है । उसके बाद जहाँ से ट्रॉसफार्मर और विद्युत तारों की मदद से बिजली को घर-घर तक पहुँचाया जाता हैं...
(सब के सब उनकी बात को ध्यान से सुनते हैं...)
अच्छा मुझे आपसे एक बात पूछना हैं... मुझे ये बताइये कि बिजली बनने की प्रक्रिया में जब ईंधन खत्म हो जाता है तो दुबारा ईंधन कैसे भरते हैं? क्योंकि अन्दर तो कोई जा नहीं पाता है...
मुझे आपकी बातें सुन कर हार्दिक प्रसन्नता हो रही हैं... आपने बहुत ही अच्छा सवाल किया हैं... दरसल सारी प्रक्रिया कम्प्युटराइज्ड होती है और रोबोट की मदद से हम दुबारा ईंधन भरते हैं... क्योंकि उसके अन्दर इन्सानों का प्रवेश वर्जित होता है ।
(इसके बाद सब लोगों को अमित कुमार रियक्टर भवन के बाहर ले कर निकलते हैं और कंटेमिनेशन की जाँच करने वाली मशीनों के पास पहुँचते हैं...)

ये क्या है ?
मिसरी मौसी... हम जब भी परमाणु बिजली घर के अन्दर रियक्टर भवन से काम करके निकलते हैं तो इसी मशीन से होकर गुजरते हैं... इससे हमें ये पता चलता है कि हमारे शरीर और कपड़े में कोई कंटेमिनेशन (रेडीयो धर्मी कणों का वस्त्रो अथवा शरीर पर चिपक जाना) तो नही लगा ? याद है शुरु में हमने आपको विषेश प्रकार वस्त्र, दस्ताने और उपकरण लगाया था...
हाँ याद आया...
इन सब चीजों को अब आप लोग उतार दीजिये और बारी बारी से इस मशीन से होकर गुजरिये... ताकि पता चल सके कि किसी को कंटेमिनेशन तो नहीं लगा...
इसके बाद सब लोग अपने वस्त्र और उपकरण चेक करके उतार कर एक जगह बने बॉक्स में जमा कर देते हैं...)
(सब लोग बारी बारी से इस मशीन से होकर गुजर जाते हैं...
देखा ये हरे रंग का बटन जलने पर मशीन ने बता दिया कि किसी को भी कोई कंटेमिनेशन नहीं लगा...
अरे हाँ, ये तो बहुत ही सुरक्षित है... तभी यहाँ वर्षो तक कार्य करने वाले हमारे इंजीनिअरों को कुछ भी नहीं होता... अब समझ में आया...
बिल्कुल ठीक... आइये, अब मैं आप सब को टरबाइन हॉल में ले चलता हूँ...
(सब के सब टरबाइन हॉल में पहुँचते हैं...)

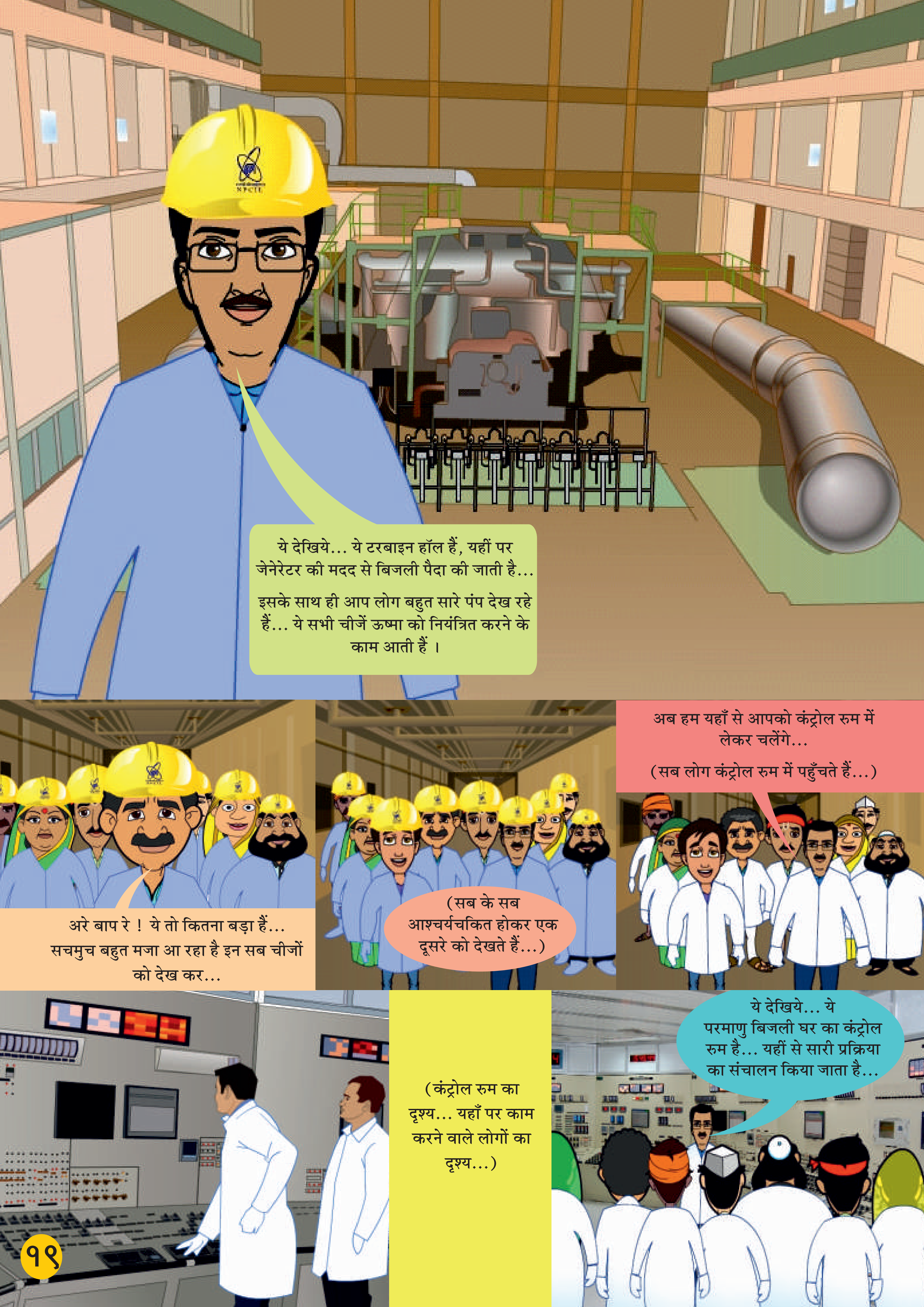
ये देखिये... ये टरबाइन हॉल हैं, यहीं पर जेनेरेटर की मदद से बिजली पैदा की जाती है...
इसके साथ ही आप लोग बहुत सारे पंप देख रहे हैं... ये सभी चीजें ऊष्मा को नियंत्रित करने के काम आती हैं ।
अरे बाप रे ! ये तो कितना बड़ा हैं... सचमुच बहुत मजा आ रहा है इन सब चीजों को देख कर...
(सब के सब आश्चर्यचकित होकर एक दूसरे को देखते हैं...)
अब हम यहाँ से आपको कंट्रोल रुम में लेकर चलेंगे...
(सब लोग कंट्रोल रुम में पहुँचते हैं...)
(कंट्रोल रुम का दृश्य... यहाँ पर काम करने वाले लोगों का दृश्य...)
ये देखिये... ये परमाणु बिजली घर का कंट्रोल रुम है... यहीं से सारी प्रक्रिया का संचालन किया जाता है...

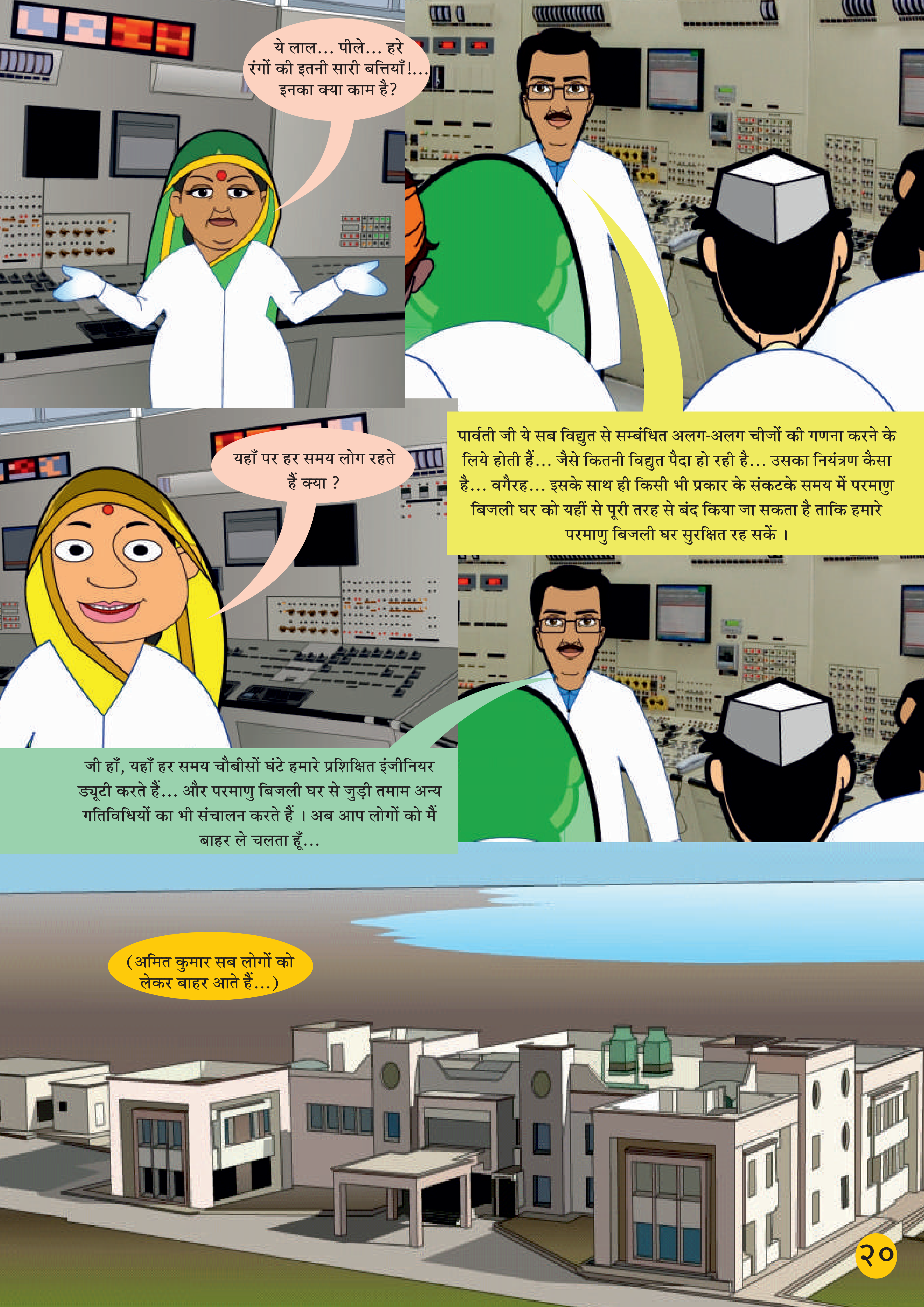

ये लाल... पीले... हरे रंगों की इतनी सारी बत्तियाँ!... इनका क्या काम है?
पार्वती जी ये सब विद्युत से सम्बंधित अलग-अलग चीजों की गणना करने के लिये होती हैं... जैसे कितनी विद्युत पैदा हो रही है... उसका नियंत्रण कैसा है... वगैरह... इसके साथ ही किसी भी प्रकार के संकटके समय में परमाणु बिजली घर को यहीं से पूरी तरह से बंद किया जा सकता है ताकि हमारे परमाणु बिजली घर सुरक्षित रह सकें ।
यहाँ पर हर समय लोग रहते हैं क्या ?
जी हाँ, यहाँ हर समय चौबीसों घंटे हमारे प्रशिक्षित इंजीनियर ड्यूटी करते हैं... और परमाणु बिजली घर से जुड़ी तमाम अन्य गतिविधियों का भी संचालन करते हैं । अब आप लोगों को मैं बाहर ले चलता हूँ...
(अमित कुमार सब लोगों को लेकर बाहर आते हैं...)

(बाहर मौजूद कूलिंग टॉवर का दृश्य...)
अरे वो क्या है चिमनी जैसी... वहाँ से तो धुआँ निकल रहा है...
हँसते हुए... अरे वो तो कूलिंग टॉवर है... और वो जो आपको धुआँ जैसा दिखा रहा है वो पानी की वाष्प है जो ऊपर निकल रही है... कूलिंग टॉवर की मदद से हम बिजली घर के अन्दर से निकलने वाले पानी का तापमान ठंडा करते रहते हैं... जिससे पानी का तापमान सामान्य होने के कारण जलीय जीव जन्तुओं पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है...
अच्छा इस पुरी प्रक्रिया में क्या कुछ कचरा भी निकलता है? उनका क्या होता है? क्योंकि हमने सुना है कि उससे भी बहुत सारा विकिरण निकलता है...
बिल्कुल सही बात पूछी है... दरसल परमाणु उर्जा से बिजली बनाने की पूरी प्रक्रिया में बहुत ही कम मात्रा में कचरा निकलता है और बिजली बनाने में जो इंधन इस्तेमाल होने के बाद बचता है उसको हम पानी की बहुत गहरी टंकी में कई वर्षों तक रखते हैं जिससे कि विकिरण न फैले... बाद में हम इसको दुबारा इस्तेमाल में लाते हैं... जबकि कोयले और अन्य स्त्रोतों से निकलने वाली CO_2, SO_2 एवं NO_2 अत्यंत हानिकारक होती है और वातावरण को दूषित बना देती है ।

इसके साथ ही हमारे देश में इस कचरे के प्रबंधन की तकनीक भी पूर्ण रुप से विकसित है । और जो भी कचरा पदार्थ निकलते हैं, उनको हम उच्च तकनीक वाली मशीनों की सहायता से कँप्रेस (सिकोड़ कर) करके जमीन के अन्दर कंक्रीट और सीमेंट के बनें ढाँचों में सुरक्षित रुप से दबा कर रख देते हैं और ये कई वर्षो तक जमीन में दबे रहते हैं ताकि उनसे आस-पास के वातावरण में कोई विकिरण न फैले... समझे...
समझ गये सर...
Yes, Sir...
अब हम आपको वहाँ ले कर चलेंगे जहाँ से हम परमाणु बिजली पैदा करने के लिये पानी लेते हैं...
(सब लोग नीचे की तरफ पानी के स्त्रोत की तरफ जाते हैं...)

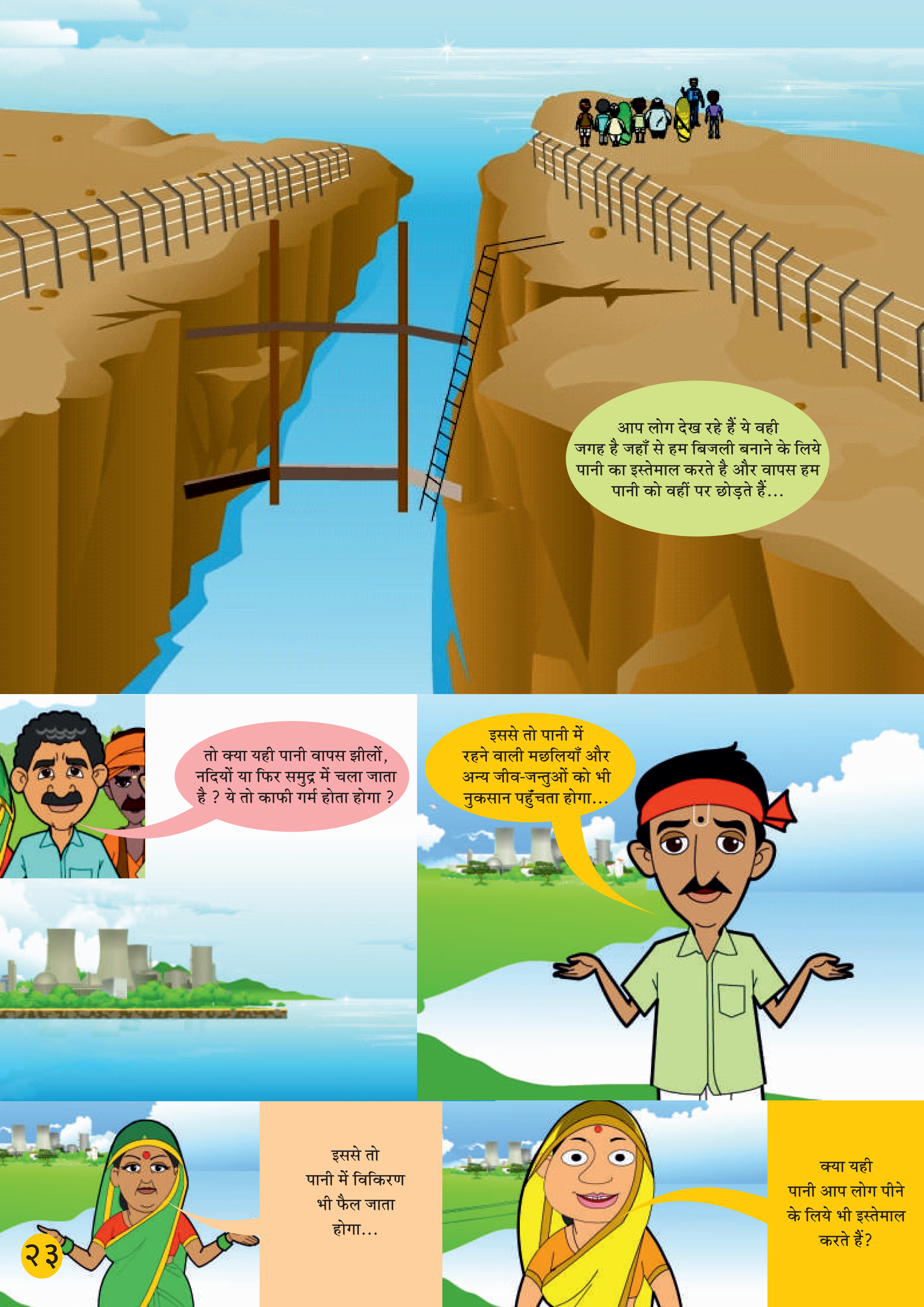
आप लोग देख रहे हैं ये वही जगह है जहाँ से हम बिजली बनाने के लिये पानी का इस्तेमाल करते है और वापस हम पानी को वहीं पर छोड़ते हैं...
तो क्या यही पानी वापस झीलों, नदियों या फिर समुद्र में चला जाता है ? ये तो काफी गर्म होता होगा ?
इससे तो पानी में रहने वाली मछलियाँ और अन्य जीव-जन्तुओं को भी नुकसान पहुँचता होगा...
इससे तो पानी में विकिरण भी फैल जाता होगा...
क्या यही पानी आप लोग पीने के लिये भी इस्तेमाल करते हैं?

अरे भाई, सब के सब एक साथ इतने प्रश्न करेंगे तो उसका उत्तर मैं कैसे दे पाऊँगा? मैं एक-एक करके उत्तर देता हूँ... निस्संदेह बिजलीघर से निकलने वाला पानी थोडा गर्म होता हैं, लेकिन कूलिंग टावर में जाने के बाद पानी को ठंडा करके वापस पानी के स्त्रोत में छोड़ दिया जाता है जिससे जल में रहने वाले जीव-जंतुओं, खास तौर पर मछलियों पर कोई प्रभाव नहीं पडता है... और मछलियाँ बड़ी ही आसानी से पनपती हैं... आप थोड़ा पास जा कर ध्यान से देखिये...और जहाँ तक पानी में विकिरण फैलने का संबध है तो में आप को बता दूं कि ऐसा कुछ भी नहीं होता है...
(बुधिया पास जाकर ध्यान से देखता है... उसे पानी में कुछ मछलियाँ तैरती दिखायी देती हैं...)
बिल्कुल... और जहाँ तक पीने के पानी का प्रश्न है... हम सभी लोग यही पानी पीते हैं... क्योंकि ये पानी भी अन्य पानी की ही तरह एक सामान्य पानी है. जैसे आप सब लोग अपने घरों में पानी को साफ करके पीते हैं उसी प्रकार इसको इस्तेमाल में लाने से पहले साफ किया जाता है... उसके बाद ही पानी को परमाणु बिजली घर और पास में बसी हुई आवासीय कॉलोनी तक पहुँचाया जाता हैं... समझे !
अरे हाँ, यहाँ तो बहुत सारी मछलियाँ तैर रही हैं... इसका मतलब लोग जबरदस्ती अफवाह फैलाते हैं...
तो क्या हमने जो बहुत ही स्वादिष्ट और मीठा पानी पिया था वो यहीं का था ?
जी हाँ... वो यहीं का था... बिल्कूल सही कहा आपने, हा हा हा... (हँसते हुए)

एक बात और देखिये परमाणु बिजली घर यहाँ से कितनी ऊँचाई पर बने हुये हैं... इसी प्रकार समुद्र के किनारे बसे हुये हमारे अन्य परमाणु बिजली घरों को भी अत्यंत ऊंचाई पर बनाया जाता है... क्योंकि ऊँचाई और उचित दूरी होने के कारण पानी की लहरों से हमारे परमाणु बिजली घर सुरक्षित रहते हैं... इसीलिये हमें सुनामी से भी डरने की बिल्कुल जरुरत नहीं हैं...
आप बिल्कुल सही कह रहे हैं... सब कुछ आँखों के सामने है...
आप सबने परमाणु बिजली घर तो घूम लिया अब मैं आप सब लोगों का गाँव और कॉलोनी की सैर कराता हूँ... लेकिन उससे पहले मैं आप सब लोगों को एक ऐसी जगह ले चलूंगा जहाँ आपको बहुत मजा आयेगा...
(सब के सब वहाँ से निकलते हैं और वहाँ उन्हें कुछ दूरी पर नाव दिखायी देती है। जिस पर बैठकर कुछ मछुआरे मछली पकड़ते हैं...
क्यों नंदू, कैसे हो ? क्या हाल है ? आज कल तो खूब मछलियाँ पकड़ रहे हो ।
अरे राम राम साहेब ! सब आप लोगों की ही कृपा है । अगर आप लोगों ने हमें मछलियाँ पकड़ने के लिये नाव नहीं दी होती... तो हम तो भूखे ही मर जाते... सब मछुआरे आपके बड़े ही आभारी हैं...

अरे ऐसी कोई बात नाहीं हैं... अरे हाँ, ये लोग जगदीशपुर गाँव से आये हैं और तुम्हारी नाव पर सैर करना चाहते हैं... इनको आम और अन्य फलों के बाग दिखाने ले चलना है... तैयार हो ?
बिल्कुल साहब... अभी लिये चलते हैं... (सब लोग नाव पर सवार हो जाते हैं... थोडी देर बाद एक जगह किनारे पर नाव रुकती है और सब लोग वहाँ उतर जाते हैं...)
(एक खूबसूरत फलों के बगीचे का दृश्य... जहाँपर खूब सारे आम, अमरुद, केले और तरबूज के पेड़ दिखायी देते हैं...)
अरे ये हम सब कहाँ आ गये ? ये तो जन्नत जैसा दिखायी दे रहा है । चारों तरफ आम के बाग, अमरुद, केले और तरबूज के पेड़... अरे वाह, मजा आ गया... कितने सारे फलों के पेड़ हैं । भूख भी बड़े जोरों की लगी है ।

अब हम सब यहीं बैठकर इन स्वादिष्ट फलों को चखेंगे...
(आम खाते हुए...) अरे वाह ! ये तो बहुत ही मीठा, रसीला और स्वादिष्ट है... मजा आ गया खा कर...
भई मैं तो केले ही खाऊँगी...
लेकिन साहब... परमाणु बिजली घर के नजदीक होने के बावजूद भी यहाँ इतने सारे फल मौजूद हैं, वो भी काफी स्वादिष्ट... क्या विकिरण का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ?
यही बात तो हम लोगों तक पहुँचाना चाहते हैं कि परमाणु बिजली घरों के आस पास की जगह काफी स्वच्छ और हरित होती है और यहाँ के फलों के बाग पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । समय समय पर हम इन सब के नमूने लेकर अपनी प्रयोगशालाओं में जाँच भी करते हैं ताकि हमें इनके शुध्दता के बारे में पता चल सके इसके साथ ही उच्च तकनीक के प्रयोग से हम बीजों की गुणवता भी बढाते हैं, जिससे हमारे आम के फल, केले, अमरुद और अन्य फल और भी स्वादिष्ट हो जाते हैं और क्योंकि आप ने जब परमाणु बिजली घर के अंदर सैर की थी तब आपको कोई विकिरण नहीं लगा. तो यहाँ कैसे प्रभाव पड़ेगा ।

हाँ समीर बेटा... तुम बिल्कुल ही सही कह रहे थे... अब हमें पूरी तरह से विश्वास हो गया कि परमाणु बिजली घर के लगने से हमारे खेत, आम के बाग, फसल, मछलियाँ सब सुरक्षित रहेंगी... उन पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा...
सब लोग थोड़ी देर तक हँसी-मजाक करते हैं और फिर फल खाकर नाव पर वापस बैठ जाते हैं...
समीर बेटा... आज की सैर तो हम जिन्दगी भर नहीं भूलेंगे...
अब चलिये मैं आप सबको गाँव और कॉलोनी की ओर ले चलता हूँ...
(नाव किनारे पर आकर रुकती है... सभी गाँव वाले नाव से उतर कर कॉलोनी की ओर चल पड़ते हैं... रास्ते में उन्हें एक वृद्ध पुरुष मिलते हैं जो अपने पोते को गोदी में लिये चले आ रहे हैं...)
अरे सिन्हा साहब, नमस्कार ! क्या हाल है ? आज अपने पोते को ले कर कहाँ चल दिये?
नमस्कार कुमार साहब ! बस ऐसे ही सैर पर निकला हूँ... आप बताइये, आज कहाँ इतने सारे लोगों को लेकर निकले हैं?

अरे कुछ नहीं... ये हमारे मित्र हैं जो आज ही जगदीशपुर गाँव से आये हैं, इन्हें मैं कॉलोनी और गाँव की सैर कराने निकला हूँ... बुधियाजी, ये सिन्हा साहब है... ४० वर्षों तक इन्होंने इसी परमाणु बिजली घर में कार्य किया है और सेवानिवृत्त होने के बाद अब ये अपने परिवार के साथ यहीं बस गये हैं... इनके एक बेटा और एक बेटी है और एक नटखट पोता है... बेटी विदेश में पढाई कर रही हैं... और बेटा भी किसी अच्छी कंपनी में ऊँचे औहदे पर काम कर रहा हैं... आप देख रहे हैं... अभी भी सिन्हा साहब कितने चुस्त-दुरुस्त हैं?
हाँ, इन्हें देख कर तो कोई नहीं कह सकता कि ये सेवा निवृत हो चुके हैं और ४० वर्षों तक परमाणु बिजली घर में काम किया है।
(सिन्हा साहब से बात करके वो लोग आगे बढ़ते हैं... रास्ते में गाँव आता है... गाँव की पक्की सड़कें, नालियाँ, शौचालय, सामुदायिक केंद्र देखकर सभी आश्चर्य चकित रह जाते हैं...)

अरे वाह, कितनी पक्की और साफ सुथरी सड़कें है... नालियाँ भी बनी है...
अरे वो देखो, पानी के लिये जगह-जगह पर हैण्ड-पम्प भी लगे हैं...
ये सब आप लोगों ने लगवाया है ?
जी हाँ, ये सारा विकास गाँव में परमाणु बिजली घर लगने के बाद हुआ है...
देखा काका, मैंने बताया था ना...

(थोडी देर बाद उन्हें रास्ते में प्राथमिक विद्यालय दिखता है... राजकीय कन्या पाठशाला, वहाँ बच्चों को कॉपी, किताबे और बस्ते नि:शुल्क बंट रहे थे...)
राजकीय कन्या पाठशाला
अरे वाह! गाँव में लड़कियों के लिये भी पाठशाला है... हमारे गाँव में तो लड़कों के लिये भी पाठशाला नहीं है... यहाँ तो लड़कियाँ भी स्कूल जा रही हैं...
(थोडी दूर पर सिलाई घर नजर आता है... जहाँ बहुत सी स्त्रियां सिलाई सीख रही होती हैं...)
Silayi Ghar
अरे ये तो सिलाई घर है... इन्हें सिलाई मशीन किसने दी ?
इन लोगों को हमने ही स्वरोजगार के साधन उपलब्ध कराये हैं... ये सभी लड़कियाँ परमाणु बिजली घर में इस्तेमाल होने वाले वस्त्रो को सिलती हैं... और हम इन्हें उचित दामों पर इनसे खरीद लेते हैं...
भई वाह! ये तो बहुत ही अच्छी बात है...

NPCIL AMBULANCE
आगे चल कर प्राथमिक चिकित्सालय पर काफी भीड़ दिखती हैं... तभी वहाँ से महिला चिकित्सक बाहर आती हुयी दिखती हैं...
नमस्ते डॉ. आभा ! कैसी हैं आप ?
HOSPITAL
अरे नमस्ते कुमार साहब ! मैं बिल्कुल ठीक हूँ । आप बताइये...
क्या बात है ? आज काफी चहल-पहल है... आखिर कोई खुशखबरी है क्या ?
जी हाँ... आज गाँव में रहने वाले पांडू मछुवारे की पत्नी फुलवा को जुडवाँ बच्चे जो हुए हैं... सब लोग उसे बधाई देने आये हैं... इसीलिये इतनी भीड़ है...
अरे वाह! मेरी तरफ से भी उसे बधाई दे दीजियेगा...
देखा पार्वती काकी... सविता काकी कितनी गलत बात कह रही थी... आपने आज अपनी आँखों से देख लिया कि परमाणु के आस-पास रहने से कोई विकिरण नहीं निकलता... नहीं तो फुलवा कभी भी माँ नहीं बन पाती...
आइये अब मैं आप सब को कॉलोनी दिखाता हूँ... कॉलोनी थोडी दूरी पर है इसलिये हम सब बस से चलेंगे...
हाँ. समीर बेटा... तुम सही कह रहे थे... गाँव जाकर सविता के कान खींचूंगी...
(सब लोग पार्वती की बातें सुनकर ठहाका मार के हँस पड़ते हैं...)

(सब बस में बैठ जाते हैं और थोडी ही देर में कॉलोनी पहुँच जाते हैं... कॉलोनी का दृश्य: मकानों का दृश्य, सामुदायिक केन्द्र, दुकानें, पक्की सड़के, लाइटें, पेडों के झुंड, कारें इत्यादि...)
अरे ये तो बहुत ही सुन्दर कॉलोनी है ! सभी चीजे बडे ही व्यवस्थित व सुन्दर तरीके से बनी हुई हैं... स्वच्छता का भी काफी ख़याल रखा गया है...
भई कॉलोनी देख कर तो मुझे भी यहाँ रहने का मन कर रहा हैं... (सब लोग मुस्करा उठते हैं...)
जी हाँ साहब... वास्तव में जब समीर ने हमें बताया था तब हमें विश्वास तो हुआ था, लेकिन आज परमाणु बिजली घर घूमने के बाद तो हमारी सारी भ्रांतियां दूर हो गयीं...
आपने देखा किस तरह से परमाणु बिजली घर के लगने से पूरे गाँव और उसके आस-पास के क्षेत्र का किस प्रकार विकास हो जाता है? मुझे पूरी उम्मीद है कि आप सब को यहाँ घूम कर काफी बातें जानने को मिली होगी... और आपके मन में जो भी दुविधा बनी थी वो दूर हो गयी होगी...
हाँ हमारे सारे शक और गलतफहमियाँ दूर हो गये...
हाँ हम सब अब जान गये हैं कि विकास का मतलब क्या होता हैं? क्यों विकास जरुरी है ?
और हाँ, अब हम भी छप्पर के घरों में नहीं रहेंगे... हमारे घर भी अब पक्के बनेंगे... (सब के सब हँस उठते हैं...)

बुधिया और गाँव वालों के परमाणु बिजली घर घूम कर वापिस आने पर क्या हुआ ?

क्या हुआ जब बुधिया ने अन्य लोगों को परमाणु बिजली घर के बारे में बताया ?

क्या जगदीशपुर गाँव में परमाणु बिजली घर लग सका ?

जानने के लिये प्रतीक्षा करें, अगले अंक की...

"अणु ऊर्जा... देश की ऊर्जा
स्वच्छ ऊर्जा... स्वच्छ भारत"

बदल गया बुधिया...

कहानी जगदीशपुर के आदर्श गाँव बनने की

क्रमशः

एनपीसीआईएल
NPCIL

न्यूक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
द्वारा जनहित में जारी...

द्वारा प्रकाशित

कार्पोरेट प्लानिंग और कार्पोरेट कम्यूनिकेशन्स निदेशालय (सीपी और सीसी)

६-एस-१४, विक्रम साराभाई भवन, अनुशक्तिनगर, मुंबई - ४०० ०९४.
ई-मेल : cpcc@npcil.co.in
वेबसाईट : www.npcil.nic.in